अपना अपना भाग्य

इन चार बन्धुओं से मेरी मुलाकात बर्लिन मे हुई थी।हम सभी टेक्निकल यूनिवर्सिटी के स्टूडेन्ट थे और सिगमून्डसहोफ मे रहते थे।मदन मेरे ही हॉस्टल के पहले फ्लोर पर रहता था.पर चॉद.तेज और गुरमैल दूसरे हॉस्टलों मे रहते थे।शाम को तकरीबन रोज ही हमारी मुलाकात होती थी।इकठ्ठे हम खाना बनाते थे और गई रात तक बैठे गप्पे मारते थे।इनसे मेरा सक्रिय साथ छ महीने तक रहा.पर इनसे मै यदा कदा मिलता ही रहता था।उन दिनो हम प्रिपरेट्री फैकल्टी मे होते थे।वर्क परमिट हममे मे किसी के पास नही था।इसके उसके वर्क परमिट पर यहॉ वहॉ काम कर लेते थे।अगर हम महीने मे पॉच दिन भी काम कर लेते थे.तो कॉख कूॅख के पूरा महीना निकाल ले जाते थे।

हमे वर्क परमिट यूनिवर्सिटी मे रजिस्ट्रेशन के बाद ही मिल पाया।अब हम साल मे पॉच महीने काम कर सकते थे।

प्रिपरेट्री फैकल्टी मे ही मुझे इस बात का पता चल चुका था कि मेरे ये चारो बन्धु बर्लिन मे पढने नही.बल्कि यहॉ बसने के ख्याल से आये हैं।

कमरा हम सबके पास था।यूनिवर्सिटी मे रजिस्ट्रेशन होते ही हमारे वीसे की अवधि बढा कर दो वर्ष की कर दी गई.हमे वर्क परमिट भी मिल गया और तमाम दूसरी सुविधायें भी।

यकायक मेरे ये चारो साथी स्टार्टिन्ग लाईन पर ऑउफ डेर लिनिये फेर्टिग लोसःरेडी स्टेडी गोः सुनने के लिए अपने घुटनो पर जा झुके।ये एक दौड़ थी।इस दौड़ मे इन्हे अन्त मे कोई लाल फीता नही छूना था.बल्कि थक थका कर एक जर्मन या यूरोपीय लड़की के कदमों मे गिर जाना था।इनकी लड़कियॉ भी ऐसी होनी चाहियें थी.जो बैजयन्तीमाला से लेकर श्रीदेवी.हेमा से लेकर जयाप्रदा को भी फेल कर दें।इनकी उम्र बीस से ऊपर कदापि नही होनी चाहिये थी।ये बिल्कुल अनछूई होनी चाहिये थीं।फिर ये इन्हे अर्द्धनग्न अपनी बॉहों मे लेकर अपने अपार्टमैन्टों मे ले जॉय.पहले अपना गोरा बदन अर्पित करें और फिर इनसे पूछेंःवास विल्स्ट डू मेयर!और तुम्हे क्या चाहिये!

ःवास इख वील!मुझे क्या चाहिये!

ःसाग माल नूयर।सिर्फ कहके देखो।

ःमेडेल्स वी डू.फिल गेल्ड.ऊनबेफ्रिस्टेट विसूम।वाइस डू वास!इन्डिएन इस्ट आईन साइज लान्ड।इख हासे इन्डिएन।ःतुम्हारी जैसी लड़कियॉ.अनलिमिटेड वीजा और बहुत सारा पैसा।इन्डिया एक गन्ध देश है।मै उससे नफरत करता हूॅ।

लोस कहके इनके लिए किसी इन्सान ने अपना पिस्तौल नही दागा।इसे दागा हमारे ईश्वर ने।

अपनी अपनी ट्रैक्स पर ये बेतहाशा दौड़ पड़ेः

इन चारों का ये कहना था कि इन्हे लड़कियॉ तो रास्तों पर मिलने से रही।ये इनसे या तो होटलों मे टकरायेंगी या फिर पव्स मे।लिहाजा मदन और गुरमैल कैम्पिन्सकी होटल मे बेयरे बन गए।चॉद एक पॉच सितारा होटल स्वाईत्तसरहोफ मे जा लगा और तेज एक इन्डियन इम्बिस मे छोले बनाने लगा.भटूरे तलने लगा।जब पैसे आये.तो इनके कपड़े लत्ते भी बदले।इन्डिया से लाये कपड़े इन्हे बेहद उबाऊ लगने लगे।यहॉ के खरीदे जीन्स की पैंटों और जैकेटों के जरिये इन्होने अपना यूरोपीयकरण किया।आये दिन ये चारो मुझे नाईकी या पूमा के जूतों मे कंगारूओं की तरह कुलॉचे मारते नज़र आते थे।इन्हे ये पता नही था कि मौलिकता मे भी एक सुन्दरता होती है।ये जर्मन लड़कियों की ताक में निकले थे.पर जर्मन भाषा को कोई अहमियत न देते थे।

काम के बाद इनके पास जो भी खाली समय होता था या तो वो झगड़ने मे बिताते थे या फिर हाऊस एन के कम्बाईन्ड कीचन मे।इनके बीच परस्पर प्रतिस्पर्धा तो रहती थी.पर हर दिन एक दूसरे से बिना किसी नागा के मिल कर एक दूसरे की मॉ बहन करना नही भूलते थे।पता नही इन्हे एक दूसरे की खिल्लियॉ उड़ाने मे ऐसा कौन सा आनन्द मिलता था!

तेज के अलावे मदन.गुरमैल और चॉद को अपने कामों पर काले पैंट.सफेद कमीज.काली नेक टाई.काले जूतों और सफेद मोजे मे जाना पड़ता था।तेज के लिए ये यूनिफार्म जरूरी नही था.पर उसे भी अपने काम पर एक सफेद रंग का एप्रन बॉधना पड़ता था।उसे इन तीनो ने इस एप्रन की वजह से जनखे का नाम दे रखा था।वो जरा बलखा के चलता भी था।बिना आधा पाव लोमा तेल अपनी बालों मे डाले वो अपनी मॉग भी न काढता था और बिना आधी शीशी किसी एक सस्ते परफ्यूम को अपनी कॉखों मे फूरफूराये अपनी कमीज भी नही पहनता था।उसके पास एक लम्बी कद थी और वो एक हद तक अमिताभ बच्चन को इमिटेट करता था।

गुरमैल के पास कोई खास कद तो न थी.पर वो जट्ट था और धमेन्द्र को इमिटेट करता था और अपनी ऑखों के कोरों पर हल्की सी काजल भी लगाता था।

चॉद और मदन दोनो कानपुर के रहने वाले थे।एक दूसरे को स्कूल के जमाने से जानते थे।चॉद थोड़ा हकलाता था और मदन के सर के बालों पर पतझड़ों ने कयामत मचा रखा था।ये उसकी सबसे बड़ी सरदर्दी थी।वो शैम्पूस बदल बदल के हार गया.पर उसके सर का चॉद देखते ही देखते पूनम का चॉद बन चला था।

इनकी पहली बैठकी टेक्निकल यूनिवर्सिटी के हाऊप्ट गेब्ओइडे मे सुबह दस बजे लगती थी।वहॉ एक कैन्टिन चलता था।अपनी चाय कॉफी लेकर ये सीढियों पर जा बैठते थे।शुरूआत मदन करता थाःहाय हाय गुरमैल!तू इत्थे नेक टाई बीच घूम रहा है और उत्थे जालंधर बीच किसी पोखरी बीच उदास तेरी भैसनिया त्वाडे इन्तजार मे बैठी होंगी।

गुरमैल का तन बदन जल कर रह जाता थाःतेरी मॉ नू बणिये!तू इत्थे क्या कर रहा है!अपने बाप के संग काणपुर के चौराहों पर मारकिन क्यों नही बेचता!

जब चॉद बीच बचाव करने का प्रयास करता था तो मदन शुरू हो जाता थाःशुक्र कर चॉद कि हमारे देश मे एन सी सी आ गई थी.जिनकी तरफ से तूझे दो खाकी के पैंट और कमीज मिल गए.वरना तू नंगे स्कूल आता।तेरे पास दूसरे कपड़े भी थे क्या!

जब तेज की बारी आती थी तो ये तीनो हिजड़ों की तरह ताली बजा बजा के गाने लग पड़ते थेःमेरे अॅगने मे तुम्हारा क्या काम है!

शायद ही ऐसा कोई दिन रहा होगा कि ये बिना एक दूसरें की खिंचाई किये एक दूसरे से अलग हुए होंगे.फिर भी रोजाना इनकी बैठकी होती थी।

इन चारो मे मदन ही था.जिसकी हिन्दी.अंग्रेजी और जर्मन सबसे अच्छी थी।उसे अपना नाम मदन मोहन बिल्कुल पसन्द नही था।हम उसे एम एम कहके बुलाते थे।

बिना अपने दोस्तों को बताये वो तकरीबन सारे यूरोपीय देशों की लड़कियों से पेनफ्रेन्डशीप बना रखा था। उसके पास इन की तमाम फाईलें थी, पर आऊट की अब तक सिर्फ एक। घन्टों चिन्तन मनन करने के बाद वो एक लेटर फार्मूलेट करता था, जिनमे वो हिन्दी के गमगीन गाने से लेकर गज़लों तक का भी अनुवाद कर मारता था, फिर इसकी कॉपियॉ वो सभी को भेज देता था। उसके सारे पत्र सिर्फ एक लिखे पत्र की कॉपियॉ होते थे। आऊट की फाईलें मोटी तो होती जा रही थी, पर अब तक न तो किसी ने उसे अपने पास बुलाया था और न ही बर्लिन आने का किसी ने जिक्र किया था। वो जो कुछ भी कमाता था, उसका एक भाग उसे इन्डिया भेजना पड़ जाता था, बाकी वो डॉक टिकटों या फिर फ्लो मार्केट के सामानों पर खर्च कर मारता था। उसके कमरे मे जो कार्पेट पड़ी थी, उसे वो किसी दूसरे हॉस्टल के कॉमन रूम से चुरा लाया था। इस कार्पेट पर वो न जाने फ्लो मार्केट के कौन कौन से कबाड़ इकट्ठा कर रखा था। टेलीविजन, विडियो, रेडियो, फैक्स, फ्रीज, माइक्रोवेभ, फोटोकॉपीयरर, इलेक्ट्रिक पियानो और न जाने क्या क्या, जिनकी सिर्फ स्टैंड लाईट ही काम करती थी। शाम के समय उसका कमरा यहॉ के टेगेल एयरपोर्ट से कम न दिखता था।

अपने खाने पीने का इन्तजाम वो अपने होटल मे ही कर लेता था, वरना वो अपनी खिड़की पर बैठ कर बस यही ताका करता था कि सामने के गगनचूम्बी हॉस्टल पी के किस फ्लोर का इन्डियन और पाकिस्तानी अपने खाने पीने का सामान लेकर कम्बाईन्ड कीचन मे जा रहा गया है। मदन वहॉ विराजमान। वो अपने कपड़े लत्ते भी विलका से खरीदता था, जो उन दिनो वर्लिन मे औसतन एक सस्ती दुकान हुआ करती थी। जरूरत पड़ने पर वो वाईने वगैरह भी आल्डी से खरीद लाता था और वो भी ठोंगे की सस्ती वाईने।

मुझे वो जब भी दिखता था, उसकी हॉथों मे या तो पत्रों के पुलिन्दे होते थे या फिर आल्डी का थैला।

ये ऐसे ही किसी रविवार की मनहूस सुबह थी। मदन अपनी बालकोनी मे अपने वाईन का एक ठोंगा खोले किसी पत्रिका मे खोया हुआ था। मेरे ख्याल से मदन की उम्र यही कोई पैंतीस के आसपास रही होगी, पर वो अपने को चौबीस वर्ष का बताता था। तीस वर्ष के ऊपर की लड़कियों को वो बुढिया कहता था। एक मार्किंग पेन से वो इस पत्रिका मे छपे लड़कियो मे वो बस उन्ही लड़कियों के पते रंगे जा रहा था, जिनकी उम्र सोलह और अट्ठारह के बीच की थी। तभी किसी ने उसकी तन्द्रा तोड़ीःएडभोकेट साहब!कौन सी केस मे उलझे हुए हो!

मदन को काटो तो खून नही। गुरमैल एक गोरी जर्मन लड़की का हॉथ थामे मुश्किल से आधे मीटर की दूरी पर खड़ा मुस्कराये जा रहा था।

इस गुड़मैले को ये बदकिस्मत कहॉ टकरा गई!वो बेमन उठा और घंटी पर अपना अॅगूठा रखा और गुरमैल और उसकी प्रेयसी की अगवानी मे अपने कमरे का दरवाजा आधा भेड़े उनका इन्तजार करने लगा। तीन सीढियॉ चढ कर फिर एक शीशे का दरवाजा पैरों से धकेल कर जब गुरमैल फ्लोर पर आया, तब मदन को ऐसा लगा जैसे उसका प्राण उसके कन्ठों मे जा टिका हो। उससे सॉस तक नही लिया जा रहा था।

ःइस सफेद भैंस को कहॉ फॉस लिया!

वार प्रतिवार गुरमैल को भी आता था

ःजिस केस मे तुम उलझे बैठे थे, वो दीवानी का केस है या फौजदारी का!

मदन तिलमिला कर रह गया

ःहमने शादी के लिए अर्जी डाल दी है। इनका नाम क्लाऊडिया है। अपणा सैलून है, जहॉ तीन नाईने काम करती हैं। एक सप्ताह के अन्दर मै इसके फिलैट मे चला जाऊॅगा। मुझे इस सिगमन्ड मे नही रहणा। वड़ी कड़ाहियॉ देख लीं। इनकी उम्र बस चौबीस है। तुमसे मिलने गाड़ी से आया हूँ। वो सामने की सड़क पर खड़ी है।

अब मदन भी क्या कहता!सादर इन्हे अपने कमरे मे लिवा लाया। बैठने को अपनी बिस्तर की तरफ इशारा करके इनसे पीने के लिए पूछा।

गुरमैल पहले से ही सारी तैयारियॉ करके आया थाःदे दो ग्लास नलके का पानी। और तेरे पास क्या होगा!वही आल्डी दी जड़ों दा रस। मेहमानों के लिए कुछ ढंग के सरबत बरबत तो रखा कर। त्वाडी फ्रीज काम भी करती है या सिरफ बिजली खादी है!

अनमयस्क मदन कॉच के दो ग्लास लेकर कीचन जाने को उठा तो फिर गुरमैल ने अपना छोड़ाःये ग्लासे ढंग से धो लियो। पता नही किन किन रोगियों ने इन ग्लासों को अपने ओंठों से लगाया होगा।

अगर पिछले दिन मदन को वीन से मार्टिना का निमंजण न मिला होता, तो कम से कम आज मुझे उसके हृदयगति के बन्द होने के बारे मे शत प्रतिशत कोई शंका न होती।

एक दिन पहले वो चहकता मेरे कमरे मे आया था, और मेरे हॉथों मे मार्टिना की फोटो पकड़ा कर मुझे वो उसकी उम्र ऑकने को कहा था। जब मैने उसकी उम्र बीस बताई तो वो मुझे उसका लिखा पत्र भी पढने को दिया।

जब मैने मार्टिना का लिखा पत्र पढा, तब वो मुझे अट्ठारह की भी न लगी।

मदन हैरान रह गया और कहने लगाःप्रमोद!तुम मुझे अपनी सौगंध दो, फिर मै तुम्हे एक सच्चाई बताता हूँ।

ःकिस बात की सौगन्ध!

ःकि तुम गुरमैल चॉद और तेज को मार्टिना के बारे मे कुछ नही बताओगे।

ःमै किसी बात की सौगन्ध नही लेता। अगर तुम कुछ बताना चाहते हो तो बताओ, वरना रहने दो। मै सौगन्ध लेकर भी अपने सौगन्ध पर टिका नही रह सकता मदन। मै भी तुम्हारी तरह सिर्फ एक इन्सान हूँ और एक भारतीय भी।

ःदीवारों के भी कान होते है, इसी वजह से मै तुम्हे जो भी कहना चाहता हूँ, तुम्हारे कान मे ही कहूँगा।

अपनी थूक से मदन मेरे दोनो कान भर गयाःबन्धु!ये मार्टिना वीन मे एक मोटेल की मालकिन है। उसके पास सिर्फ दौलत है। वो न बीस की है और न अट्ठारह की। वो सैंतीस साल की विधवा और दो जवान बेटियों की मॉ है। अपने खर्चे पर मुझे वीन बुला रही है। मै वीन जाऊॅगा, पर उससे प्रेम प्रलाप करने के लिए नही, बल्कि उसकी तिजोरियों पर झाड़ू फेरने। ज्यादे तंग करेगी, तो उसके संग सो भी लूँगा।

गुरमैल का चौड़ा होना एम एम ने मार्टिना के आये निमंजण से ही थामा। गुरमैल के हॉथों मे उसने मार्टिना का फोटो थमाया और उसका पत्र क्लाऊडिया के हॉथो मे देते हुए उससे कहाःतुम्हारे होने वाले पति के लिए इस पत्र के लिखे अक्षर भैंस के बराबर है। घन्टो लगायेगा इसे पढने मे। जरा इसे पढके उसे सुना तो दो। क्लाऊडिया ने पत्र पढना शुरू किया। गुरमैल का चेहरा जर्द होता चला गया। मार्टिना की तसवीर पर उससे दुबारा नजर न डाली गई।

बड़े बूझे मन से वो एम एम का कमरा छोड़ा।

गुरमैल को अपनी कूबत का पता था।इस काले कलूठे को क्लाऊडिया म्यूलर मिल गई. सिफर तो उसके सपनों मे भी नही आती थी।
सबकी अपणी अपणी किस्मत है।अब मै सितारों को देख कर क्यों कलपूँ!मेरे लिए तो सड़क पर गिरा एक खोटा सिक्का ही काफी है।
बकायदा उसने क्लाऊडिया से व्याह किया।क्लाऊडिया अपने व्याह के दिन लाल साड़ी ही नही बाँधी. बल्कि टिका बिन्दी तक की और इन्ही कपड़ों मे वो चर्च भी गई।दिन भर मदन. चाँद और तेज गुरमैल और क्लाऊडिया का माखौल उड़ाते रहे।पहली बार वो साड़ी पहनी थी और वो भी सिल्क की।अक्सर वो या तो उसके कमर से सरक जाती थी. या फिर उसके सैन्डिलों से जा फँसती थी।कई बार तो वो औंधे मुँह गिरने को भी आई।ये उसकी दूसरी शादी थी फिर भी उसकी घबराहट देखी जा सकती थी।आये मेहमानों मे मै सिर्फ अपने बन्धुओं को ही जानता था. जिसकी वजह से मुझे इनके साहचर्य मे रहना पड़ता था।इनके सतहे रिमार्क्स सुन सुन के मै परेशान हो चला था।हम सभी इन्डिया से थे. जहाँ कुरूप से कुरूप लड़की को भी उसकी शादी के दौरान अनिन्दनीय सुन्दरी माना जाता है. पर मेरे ये तीनो बन्धुओं की हँसी मजाक अपनी हर हदें तोड़े बैठी थीं।
एम एम मार्टिना के खर्चे पर एक सप्ताह के लिए वीन तो गया. पर वापस बर्लिन न आया।सीधे कील चला गया।कील मे उसके एक दोस्त की एक ठीक ठाक चलती पब थी. जिसे वो अपना कहता था।पता नही कील मे बर्लिन की किस पब को वो अपना कहता था!
एक दिन शाम को मुझे अपने हॉस्टल के मेनगेट पर एक बड़ी ही सभ्रान्त महिला दिखी।यूनिवर्सिटी के बाद जब मै खरीददारियाँ करके वापस लौटा. तब मैने उसे दूर से ही देख लिया था।जब मैने उसे हलो कहके अपने मेनगेट के कीहोल मे अपनी चाबी घूसाई. तो वो मुझसे पूछीः
सिन्ड जी त्सूफैलिग आऊस इन्डियन!आप संयोग से इन्डिया से हैं!
ःनिस्ट त्सूफैलिग।!इख वीन आईन ईन्डर।संयोग से नही. मै वाकई इन्डियन हूँ।
दरवाजा खोलने के बाद मै अपने एक जूते से उसे अँटकाये उसके दूसरे प्रश्न के इन्तजार मे खड़ा हो गया।
ःकैनेन जी मदन!आप मदन को जानते हैं।
ये सुनते ही मै जगा
ःया!इख कैने ईन!हाँ!मै उसे जानता हूँ।
ःक्यौनेन जी मियर सागेन. वो इख इन फिन्डे!आप बता पायेंगे. वो मुझे कहाँ मिल पाएगा!
ःसिन्ड जी मार्टिना!आप मार्टिना तो नही हैं!
ःया!आवर वोहेयर कैनेन ज़ी मिख!हाँ!पर आप मुझे कैसे जानते हैं!
ःकौमेन जी आईनफाख राईन।आईये अन्दर चलते हैं।
मार्टिना को लिये मै अपने कमरे मे आया।झोलों को एक कोने से टिका कर उसे बैठने को एक कुर्सी खींची और दो कप चाय बनाने कीचन की तरफ बढ चला।
चाय का एक कप मैने उसे पकड़ाया ही था कि उसने फिर से अपना सवाल दुहरायाःआप मुझे कैसे जानते हैं!
ःएक बार मदन ने मुझे आपकी एक तसवीर दिखाई थी।
ःआपको पता है कि वो कहाँ होगा!
ःये तो मुझे पता नही है. पर आप चाय पीयें।मै एकाध फोन करके उसका पता मालूम करता हूँ।
फ्लोर पर लगे इन्टरनल फोन से मैने पहला नम्बर चाँद का घूमाया।वो अपने कमरे मे न था।तेज भी अपने कमरे मे न था।गुरमैल को फोन करने के लिए मुझे एक बूथ मे जाना पड़ा।वो मुझे घर पर मिला।जब मैने उससे कहा कि मार्टिना बर्लिन आई हुई है और मुझसे मदन का पता पूछ रही है. तो वो चौंका
ःऔर वो तुमसे क्या पूछी!
ःइसके अलावे कुछ नही।
ःफिर तुम चुप्पी साध लो।उसका पता तो मै तुम्हे दे सकता हूँ. पर नही दूँगा।ये बणिया साला पैदायशी डॉकू है।एक दिन खुद ही अपनी मौत मरेगा।
जब मै अपने कमरे मे दुबारा वापस आया तो यकायक मार्टिना की नज़रें मेरी ओर उठीं।
ःमेरे एक दोस्त को उसका पता तो मालूम है. पर वो मुझे बताना नही चाहता है।मै उसे बाध्य नही कर सकता।पर आप मदन को क्यों ढूँढ रही हैं!
अपना कप मेरे हाँथो मे देकर मार्टिना चुपचाप उठीःयहाँ आसपास टैक्सी का कोई स्टैंड है!मुझे टेम्पेलहोफ जाना है।ठीक एक घन्टे मे मेरी वीन की फ्लाईट है।
ःपास ही एक टैक्सी स्टैंड है।मै साथ चलता हूँ।
धीरे धीरे हम टैक्सी स्टैंड की तरफ बढे जा रहे थे।यूँ ही बात बढाने के विचार से मैने उससे पूछाःमदन तो आप से मिलने भी गया था न!
ःहूँ
ःकितने दिन रहा आपके संग!
ःतीन दिन
ःसिर्फ तीन दिन!मुझसे तो ये कह गया था कि वो आपके संग एक महीने तक रहेगा।
ःवो आया तो एक महीने के लिए था।शायद मुझे उसे अपनी तिजोरी न दिखानी थी।मुझे पैसों की कोई परवाह नही है।पैसे तो वो मुझसे जितने भी चाहता. मै उसे दे देती।उसे मेरे गहनों को न छूना था।वो पारिवारिक और बेहद व्यक्तिगत थे।खैर!क्या नाम बताया था आपने अपना!
ःप्रमोद
ःओके प्रमोद!चाय के लिए बहत बहुत धन्यवाद।अपना ख्याल रखना फिर उसने मुझे अपना कार्ड भी दिया और ये भी कहा कि जब भी मेरी मर्जी हो. मै उससे मिलने वीन आ सकता हूँ।
मै अचानक उसके आप से तुम पर आने पर हैरान था।
मुझसे हाँथ मिला कर वो टैक्सी मे जा बैठी।देखते ही देखते वो टैक्सी मेरी आँखों से ओझल हो गई।

पास ही एक खाली बेन्च थी।मै उस पर जा बैठाःहत्या चाहे वो जिस प्रकार की भी हो.एक जघन्य अपराध है.पर किसी के विश्वास की हत्या से जघन्य और कौन सा अपराध हो सकता है।जब ऑखें उमड़ती होंगी.तो उससे खारा जल नही.बल्कि लहू ही झरता होगा।मदन की ये करतूत मेरे समझ के बाहर थी।अपना देश.अपना घर परिवार.अपना परिवेश.अपने सम्बन्धी सब कुछ छोड़ कर हम विदेश आते है और फिर अपने मुॅह से अपनी मॉ की निन्दा करते है.कपूतों जैसा व्यवहार करते है.विशेष कर उस मॉ का.जो एक असीम सागर के तट पर अधनंगी खड़ी जीवन पर्यन्त न सिर्फ हमारे वापसी की बाट जोहती रहती है.बल्कि अपने दोनो हॉथ पसारे कलपती रहती हैःवापस लौट आओ मेरे बच्चे।तुम्हारी निर्धन मॉ फिर भी तुम्हारी मॉ है।न उसकी ऑखें सूखी हैं.न उसका स्तन सूखा है।

मार्टिना को वीन वापस गए एक महीना भी न गुजरा था कि एक दिन एम एम ने मेरे कमरे का दरवाजा खटखटाया।मै दरवाजा ढंग से खोला भी न था कि वो मेरे गले से जा लगा।अपनी पूरी ताकत लगा कर मैने इस अमानुष को अपने से अलग किया।उसके एक एक पोर से ऐसी सड़ांध आ रही थी कि मुझे अपनी नाक पर रूमाल तक रखना पड़ गया था।

ये बर्लिन मे मेरा किसी इन्डियन से पहला झगड़ा था।अगर वो मुझे प्रोवोकेट न करता.तो मै उस पर कभीं हॉथ न उठाता।मुझे उस पर सिर्फ एक वजह से हॉथ उठाना पड़ गया था।जब उसने मुझसे ये कहाःये गोरी रंडियॉ कब से तुम्हारी सगी बहनें बन गई हैं! तब मै अपने आपे मे न रहा।

सच तो ये है कि मुझे आज के दिन तक इस बात का दुख है कि मुझे एम एम पर एक बार हॉथ उठाना पड़ गया था।मेरे व्यक्तित्व की व्यक्तिनिष्ठता आज तक वस्तुनिष्ठता पर हावी है।मुझमे आज तक अपने और पराये का भेद भाव है।जब मुझे लारिसा के लिखे एक पत्र की महज एक लाईन याद आती है कि मुझे इस दुनिया के सारे बच्चे मेरी अपनी कोख से जन्मे लगते है.तब आदर से मेरा मन आद्र हो जाता है।

चाहे एम एम जैसा भी था.था तो वो इन्डियन ही।इस व्यक्तिनिष्ठता से बरी हो पाना मेर लिए सम्भव न था।

जब वो अपनी छोटी बहन की शादी करवा कर वापस बर्लिन आया और पहली बार मुझे सीढियों पर मिला.तब मैने उसे रोक कर उससे माफी भी मॉगी।पर उससे ये भी कहा कि मै उसे एक दोस्त के रूप मे उसका अंगीकार कभीं नही कर सकता।

गुरमैल की शादी से एम एम उबर ही नही पा रहा था।आये दिन वो क्लाऊडिया का हॉथ थामे अपनी तर्जनी से गाड़ी की चाबी का छल्ला नचाते मदन के पास आ धमकता था।हमेशा उसके बाल करीने से कटे होते थे।उसके कपड़े लत्ते भी ढंग के हो चले थे।शाम का खाना ये ज्यादेतर बाहर ही खाते थे।कभीं इटेलियन तो कभीं चायनिज।दो बातें.तो मदन को कुछ ज्यादे ही आक्रान्त कर रखी थींःगुरमैल के मैनर्स और क्लाऊडिया के डिएटस।अगर वो अपनी मुटापे को सम्हाल ले.तो म्यूलर और सिफर मे कोई खास अन्तर नही रह जएगा।सिफर उन दिनो मे और आज के दिन भी जर्मनी की सबसे मॅहगी मोडेल है।

इसी बीच पता नही कौन सा तिकड़म लगा कर चॉद भी त्युरिख की एक काली कलूटी कनवर्टेड क्रिस्चियन को फॅसा लिया।उसके पास स्विटजरलैंड का परमानेन्ट वीसा था.नर्स की परमानेन्ट नौकरी थी.अपना अपार्टमेन्ट था।वो गुन्टुर की रहने वाली थी।उसका नाम यूलियाना था।वो त्युरिख मे अपनी शादी की एप्लिकेशन डाल के बर्लिन मे चॉद को लेने आई हुई थी।जब एम एम को इसका पता चला.तो उसका हृदय फिर से मीटरों नीचे खिसका।यूलियाना और चॉद को गाड़ी तक छोड़ने मै भी साथ गया था।चमचमाती ऑटोमैटिक वोल्वो मे जब यूलियाना अपने बगल की सीट पर चॉद को बिठा कर अपनी स्टेयरिंग सम्हाली भी नही थी कि एक ठहाका गूॅजा।एक साथ गुरमैल.मदन और तेज ये कहके हॅसे चले जा रहे थेःअपने धर्मेन्द्र को सही रूपाली मिली।जीवन भर इस कोयले से अपना नथूना रगड़ेगा।जब दॉत मॉजना होगा.तो उसे ही खुरच लेगा।

मुझे अपने जीवन मे पहली बार इस बात का पता चला कि पेट के बल हमे दूसरों की कमजोरियॉ तो हॅसाती ही हैं.पर सबसे ज्यादे हमें हमारी अपनी ईर्ष्या हॅसाती है।और रूलाती भी हैंः

तेज भी एक नम्बर का घाघ निकला।सबकी नज़र बचा के वो नियम से इस्ट बर्लिन सरक लेता था।हममे से किसी को इस बात का पता तक न था कि इस्ट मे उसकी कोई प्रेयसी भी रहती है।अचानक एक दिन शाम को उसने भी अपनी शादी का एलान कर दिया।हम सभी चौंके।एम एम का हृदय सरक कर उसके घुटने तक जा पहुॅचाःजरा खुल करके तो बताओ।कितने साल की है.क्या करती है.उसका नाम क्या है!!!

ःउसका नाम मारियाने है।वो तेईस साल की है।केमेस्ट्री पढ रही है।

मदन का हृदय अब उसके चौवों के नीचे था।यकायक उसके ओंठ सूखने को आये।बिना सॉस लिये वो वाईन का एक पूरा ठोंगा ही पी मारा।अगर उसका वश चला होता.तो वो अब तक तेज को अपने कमरे से मार मार कर बाहर तक खदेड़ आया होता।गुरमैल की भी बकार बन्द थी।

खैर खून खॉसी खुशी बैर प्रीति मद्यपान।रहिमन दाबे ना दबे जानत सकल जहान।ये हमारे आदि कवि रहिमन मेरे बन्धुओं के सन्दर्भ मे ईर्ष्या भूल गये थे।इसे भी न तो दवाया जा सकता है और न छुपाया जा सकता है।

ःलड़की तो बड़ी नेक है.पर उसे अपने पहले प्यार मे एक धोखा झेलना पड़ा.जब तेज ने ये कहा तो मदन और गुरमैल के ऑखों की गई ज्योति वापस लौटी।इन दोनो के चेहरे की रौनक वापस लौटी।

ःदेखो दोस्तों।मुझे तुम सबसे क्या छुपाना है!मारियाने के पास एक तीन साल का बच्चा है.जो उसे एक केन्या के एक लड़के से है।साले ये अफ्रिकन जंगली थे.हैं और रहेंगे।इनके लिए बाकी सब ठीक है.बस जिम्मेवारियों के नाम पर इनकी गॉड़ फटती है।मेरा दिल कहता है कि मै उसे निभा ले जाऊॅगा।बस तुम सबसे मुझे एक दुआ चाहिये।

तेज को वाकई हमारी दुआ चाहिये थी।

मुझे उठना पड़ाःउसे गले से लगा कर मैने उससे कहाःमेरी अपनी दुआ तुम्हारे साथ है।अब मै चलूॅगा।तुम एक नेकी का काम करने जा रहे हो।जो हिम्मत करता है.वही मर्द है।जो मदद करता है.वही खुदा है।

मै वापस अपने कमरे मे चला आया।तेज अपने दोस्तों के संग ठहाके तो लगा लेता था.पर उसके ऑखों मे यदा कदा एक निश्छलता जा उभरती थी।

उसने अपनी शादी पर न तो गुरमैल को बुलाया और न ही मदन को।उसने चॉद को भी नही बुलाया।उसने सिर्फ मुझे बुलाया और वो भी व्यक्तिगत मेरे कमरे मे आकेःतुम्हारे बिना मेरी शादी अधूरी रह जाएगी प्रमोद।स्टान्डेस आम्ट मे सिर्फ दो मिनट के लिए आ जाना।

शादी के बाद तेज ने भी सिगमून्डसहोफ को अल्विदा कहा।वहॉ दूसरे भी इन्डियन्स थे.पर उनसे मेरा कोई खास सम्पर्क नही था।टकरा गये तो

नमस्ते बन्दगी हो गई. पर इनके कमरों मे मै नही जाता था।एम एम अभीं भी सिगमून्डसहोफ मे ही था।उसका कोई भी हथकन्डा उसके काम नही आ रहा था।
वर्लिन के डिस्कोस मे भी वो धक्के पर धक्के लगाए जा रहा था।एक जिद्द भी वो पाल रखा था।शादी ब्याह कर के मुझे यहॅ यूरोप मे घर नही बसाना है।यहॅ मुझे बस अपने पॉव जमाने हैं. पर मै न तो किसी बूढिया के साथ सात फेरें लूँगा और न किसी तलाकसुदा के संग।वो एक अनछूई परी होगी और बीस वर्ष से ऊपर की कदापि नही।भगवान के घर देर है अंधेर नही है।वो बस अपने सच्चे भक्तों की सही और कड़ी परीक्षा लेता है।
एम एम के बाल कुछ ज्यादे ही झड़ने को आए।सर के पीछे का चॉद कुछ ज्यादे ही वड़ा हो चला था फिर भी वो अपनी बत्तीसी दिखा कर या अपने सस्ते चूटकूले सुना सुना कर अपने उम्र पर ब्रश पर ब्रश फेरे जा रहा था।
अब वो वर्लिन से ज्यादे कील मे रहने लगा था. पर कील शहर को भी उस पर रहम न आया।
समय अपनी धूरी पर नाचता रहा।
वर्लिन मे एम एम को आए सात वर्ष तो हो ही गए थे।इस बार उसके वीजे का एक्सटेन्शन पुलिस वालों ने बड़ा रोने और गिड़गिड़ाने पर दिया था और वो भी वस एक साल काःअगली बार विना फोर डिप्लोम के एक्शटेंशन के लिए मत आना।
लगभग सोया एम एम एकबारगी जगा और अपना लंगोटा कसा।
वार्लिन मे वो वाकई लंगोटे वॉधता था।उसके बालकोनी की अरगनी पर अलग अलग रंगों के छींटदार लंगोटे सूखने के लिए फैलाए होते थे. जिन्हे देख कर जर्मनी या दूसरे देशों से आए स्टूडेन्टस खड़े हो कर ये सोचने लग जाते थेःये किन देशों के झन्डे हो सकते हैं!
एम एम के भगवान वाकई उसका बड़ा कड़ा इन्तहान ले रहे थे।न तो उसका कोई हथकंडा काम आ रहा था और न ही कोई एप्रोच।एक अठारह उन्नीस बरस की अनछूई जर्मन या यूरोपियन लड़की उसके भाग्य मे बदी ही न थी।उसने अपने फैशन बदले. परफ्यूम्स वदले. वाल वढा कर चूटिया वॉधी. उसे सफाचट करवाया. दाढी वढाई. लेनिन कट दाढी छॉटी. पर न तो उससे राधा टकराई और न ही रूक्मिनी
वीसे की आधी अवधि खत्म होने को आई।
अचानक एम एम पर एक जर्मन औरत को रहम आया।वो वर्लिन मे टैक्सी चलाती थी।उसे जब भी हमारे इलाके की सवारी मिलती थी. एम एम के कमरे मे एकाध घन्टे के लिए चली आती थी।अपना देवदास अब कुछ ज्यादे ही पीने लगा था।वो अपना कमरा तभी छोड़ता था. जब उसकी वाईने खत्म हो जाती थी।
ये टैक्सी वाली भी खाली हॉथ एम एम के पास नही आती थी।हमेशा उसके हॉथो मे आल्डी की दर्जनो ठोंगे वाली वाईने होती थीं।पीने पीलाने मे वो एम एम से दो कदम आगे ही थी।उसका नाम आंगेला था. पर एम एम उसे गेला कहके बुलाता था।
ये गेला बावन बरस की थी।दो तलाक भी उसने अपने जीवन मे झेले थे।शायद वो अपने कम उम्र मे आकर्षक रही होगी. पर अब उसका बदन थुलथुला गया था।उसकी आवाज मर्दो जैसी भारी और फटी थी।उसकी दोनो वॉहें गोदनों से भरी पड़ी थीं और बगल के कई दॉत भी टूटे हुए थे।वो पॉच जवान बेटों ओर बेटियों की मॉ भी थी।
अब आया वो निर्णायक पल।मरता क्या न करता!एम एम ने एक गाढे लाल रंग की टाई वॉधी और फ्लो मार्कट से खरीदा एक सूट पहना।गेला सफेद रंग का एक लम्बा फ्राक पहनी. जो वो वर्षो से संजोए रखी थी।
गेला ने अपनी धूली धूलाई टैक्सी के वाईपर्स मे दो ताजे लाल गुलाब के फूल टिकाए और खुद स्टेयरिंग सम्हाली।उसके वगल वाली सीट पर उसके भावी पति मदन मोहन और पिछली सीट पर दो वेस्ट मैन बैठे जो कम से शक्ल सूरत से मुझे कहीं से सज्जन न दिख रहे थे।ये दोनो गेला के पुराने परिचितों मे से थे।
ठीक पौने दस बजे ये टैक्सी टीयर गार्डेन के स्टान्डेस आम्ट की ओर दौड़ पड़ी।
स्टान्डेस आम्ट चलने का मुझे भी न्यौता मिला था।इसे मैने टाल दिया. पर इस शाम की पार्टी मुझसे न टाली गई।ये पार्टी एम एम अपने फ्लोर के कॉमन रूम मे मनाने वाला था. जिसमे लोगों के छोड़े फेंके सोफों पर खटमलों की फौजे ही फौजें थी।खाने पीने का सारा इन्तजाम तेज प्रकाश के हॉथों मे था।सुबह से ही वो छोले भठूरे बनाने मे लगा था।
मै ठीक शाम के छ बजे कॉमन रूम मे पहूँचा. जो आमंत्रित मेहमानों से खचाखच भरा हुआ था।दरवाजे पर ही मुझसे एम एम अपनी पत्नी के साथ हॉथों मे शैम्पेन का ग्लास थामे बड़े गर्मजोशी से मिला।गुरमैल. तेज और चॉद भी सपत्नी आए हुए थे।मै अपना ग्लास थामे इन्ही के पास गया।बाकी मेहमानों मे से मै किसी को नही जानता था।तेज मुझे इस बात का संकेत दे चुका थाःभठूरे का आटा अच्छी तरह खिला नही है।जरा ध्यान रखना।पेट मे जा कर फूलेगा।
पूरे पार्टी के दौरान न सिर्फ हमारे बन्धु. बल्कि दूसरे इन्डियन मेहमान भी दबे छुपे एम एम की खिल्लियॉ उड़ाते रहे और उसके पत्नी को न जाने कौन कौन सा उपनाम देते रहे!
एम एम जैसे महारथी को वाकई सही मार लगी थी।उससे अपनी नज़रें तक न उठाई जा रही थी।अब तक खंखार खंखार के दूसरों पर उसका थूका पलट कर खुद उसके चेहरे पर पुतता जा रहा था।कौन कौन से सपने उसने देखे थे और उसे मिली एक ताड़का।
महीनो तक सिगमून्डहोफ मे उसकी खिल्लियॉ उड़ाई गई. पर सिगमून्डहोफ छोड़ कर वो जाता भी कहॉ!गेला के पास भी बस एक ही कमरे का मकान था।
वर्लिन मे टैक्सियॉ भी कुछ जरूरत से ज्यादा ही है।विना बारह चौदह घन्टे टैक्सी चलाए एक समान्य परिवार का गुजारा सम्भव नही है।गेला थकावट से चूर एम एम के कमरे मे पड़े एक सोफे पर ही ढेर हो जाती थी।न उसके आने का कोई समय नियत था और न जाने का।एम एम ने तो जैसे अज्ञातवाश ही ले रखा था।खाने पीने का सामान गेला ही लाती थी।
अभीं कुछ ही महीने गुजरे थे कि गेला एक एक्सिडेन्ट कर बैठी।उसकी लाईसेन्स छीन ली गई।फिर एम एम ने भी सिगमून्डहोफ को अल्विदा कहा।
पर ये अध्याय यहॅ पर खत्म नही हुआ था।बस एकाध वर्षो के लिए लोप सा हो गया था।
पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की दीवार गिराई जा चुकी थी।अब ये एक देश था. जर्मनी जिसकी राजधानी बोन से हटाकर बर्लिन ले आने की

बात चल रही थी। बर्लिन मे धड़ल्ले से इन्डियन रेस्त्रॉ खुलते जा रहे थे। इन्डियन ही नही, बर्लिन मे बसे पाकिस्तानी, बॉगलादेशी श्रीलंकन, जिसे देखो वही इन्डियन रेस्त्रॉ खोले जा रहा था। इन्डिया का शायद ही ऐसा कोई परिचित नाम बचा रह गया था, जो बर्लिन मे खुले या खोले जाने वाले रेस्त्रॉओं के साईनबोर्ड पर न टॉका गया हो। गान्धी, टैगोर, कलकत्ता, बाम्बे, टाईगर, अजन्ता, अशोका, महाराजा, महारानी, राजा, रानी, शिमला, कृष्णा, निर्वाण, इन्डिया पैलेस ताजमहल, गंगा और न जाने किन किन नामो के रेस्त्रॉ खोले जा चुके थे और खुलते जा रहे थे।

चॉद अपनी रूपाली के साथ त्सूरिख मे रह रहा था, पर गुरमैल और तेज बर्लिन मे ही थे और सम्भवतया एम एम भी।

बर्लिन मे अब तक यहॉ का मौसम हमसे ऑख मिचौली खेल रहा था। मौसम ही नही, बल्कि मौसम का हाल बताने वाले भी। दूसरे दिन दवाके बरसात होगी, सारे दिन सूर्य देवता तमतमाते रहते थे। दूसरे दिन सूर्य देवता तमतमायेंगे, दिन भर बरसात होती रहती थी। तापमान कभी प्लस मे तो कभीं माईनस मे। पता ही न चलता था कि कौन से कपड़े पहन कर बाहर निकलूॅ!

आज के दिन सूर्य देवता को पूरे दिन तमतमाना था। जब मै सुबह पॉच बजे घर से बाहर निकला, तब गोकि अन्धेरा था, पर बाहर इतनी ठॅढ न थी। जब मै अपने गार्डेन मे आया और अपने पैवलियन के नीचे अपनी सायकल स्टैंड ही कर रहा था कि उसके छत पर टिपा टिप होने लगी। इसके पहले कि बरसात तेज होती, साइज़े कहके मै क्लिनिकूम की तरफ बढ चला। ये टिपटिपाती बरसात देखते ही देखते ओले बरसाने लग पड़ी।

कई वर्षो के बाद अचानक अपना नाम सुन कर मुझे ठिठकना पड़ा। मै एक टैक्सी स्टैन्ड से गुजर रहा था। एक टैक्सी का दरवाजा खुला और गुरमैल लपकता मेरे पास आया। एक पल मे मै उसे पहचान ही न पाया। उसके आधे से ज्यादे बाल पकने को आये थे, पर सेहत वगैरह वैसी ही थी। मुझे काम पर जाना था। शाम के पॉच बजे इसी स्टैंड पर उससे मिलने का वायदा करके मै काम पर आ गया।

इन पिछले सात वर्षो मे मेरे अपने जीवन मे भी कम उत्थान पतन नही आया था, पर ये उत्थान पतन कम से कम मेरी गिरफ्त मे थे। मेरी अपने जीवन से न कोई मॉग थी और न कोई जिद़ ही। आज की शाम मुझे ये पता चलना था कि मेरे बन्धुओं ने इन तमाम वर्षो मे क्या खोया और क्या पाया!

गुरमैल को साथ लेकर मै अपने बगान मे गया और एक पैवलियन के नीचे हम रात के दो बजे तक बैठे रहेः

चॉद और यूलियाने अभीं भी साथ थे। त्सूरिख मे चॉद को एक पॉचसितारे होटल मे बेयरे की परमानेन्ट नौकरी मिली हुई थी, यूलियाने के पास अपनी नौकरी थी। इनकी बसी बसाई गृहस्थी थी। यूलियाने अपने पेट से कोई बच्चा न जन पाई, पर उसने मदर टेरेसा के जरिये एक अपंग इन्डियन बच्ची को गोद ले रखा था। गुरमैल उनके पास दो बार जा चुका था।

गुरमैल का वैवाहिक जीवन भी कोई खास लम्बा न टिका। पॉच वर्ष के अन्दर ही परिवार मे कलह ही कलह था। तलाक से पहले किसी तरह पास फेल होते हुए वो अपनी जीविका के लिए एक टैक्सी साईन बनवा चुका था। तब तक वो एक बेटी का बाप भी बन चुका था। तलाक के बाद उसे न सिर्फ क्लाऊडिया का मकान छोड़ना पड़ा, बल्कि बेटी भी उसके हॉथ से गई।

वो किराये पर टैक्सी चलाता था। अपनी कमाई का आधा उसे टैक्सी ओनर को देना पड़ता था और एक तय की गई रकम अपनी बेटी को। एक मामूली से मकान का किराया तक उसके बश का न था। फ्री यूनिवर्सिटी मे अपना रजिस्ट्रेशन करवा कर वो डालम डौर्फ के एक हॉस्टल मे रहता था। जिन किल्लतों मे वो जी रहा था, उसमे दुबारा घर बसाने की कोई गुंजायश न थी।

तेज और मारियाने के वैवाहिक जीवन मे कलह एक इन्डियन रेस्त्रॉ की वजह से आया। ये रेस्त्रॉ न चल पाई। तेज कर्जो मे डूब गया। ग्यूटे ट्रेनूना की बजह से बैंक से लिए कर्जो की मार अकेले तेज को सहनी पड़ी। मारियाने साफ साफ बच निकली। एक अच्छे खासे रेस्त्रॉ के मालिक को फिर से भठूरे तलने जाना पड़ा। तब तक मारियाने अपनी पढाई खत्म कर चुकी थी और एक फाक होख शूले मे लेक्चरर बन चुकी थी। जब तेज घर वापस आता था, तो मारियाने सोई होती थी। जब वो जगता था, तब मारियाने काम पर गई होती थी। शनिवार और रविवार को जो दो चार घंटे इनके पास होते थे, बस वो झगड़ो मे ही बीतते थे। शराब धन निराशा बराबर भद्दी भाषा। मारियाने का बेटा तेज को शूल की तरह गड़ता था। पहली कहर उसी पर टूटती थी। मारियाने इन बातों को ज्यादे लम्बा न सह पाई। उसने तेज से तलाक लेकर उसे कर्जो और भठूरों को सौंप दिया, उनके हवाले कर दिया।

अब बचा अपना एम एम। सितारों पर भी अपने कमान रखने वाला एम एम। उसने तीन वर्षो तक किसी तरह गेला को झेला। पासपोर्ट पर जर्मनी का उनबेफ्रिस्टेट वीसूम लगते ही उसने गेला को लात मारी और एक ग्रीक औरत को फॉसा। उसके पास एक ठीकठाक चलती ट्रेवल एजेन्सी भी थी। वो भी चालीसा पार कर चुकी थी। एम एम उसी के मकान मे रह कर उसकी हर तरह की सेवा करता था। एम एम ये सब बस सिर्फ एक वजह से झेले जा रहा थाःइस औरत के पास पैसा ही पैसा था।

उसकी तपस्या वाकई एक दिन रंग लाई। बर्लिन के सबसे मॅहगे पोटसडामर प्लात्स पर उस औरत ने एम एम के लिए एक बहुत ही भव्य इन्डियन रेस्त्रॉ खुलवा दिया और एम एम को उसका मैनेजर बना दिया। शुरू मे तो ये रेस्त्रॉ ठीकठाक चली, पर इस रेस्त्रॉ का किराया इतना ज्यादे था कि कुछ महीने मे ही ये लड़खड़ाने को आईइसके पहले कि ये रेस्त्रॉ पूरी तरह लड़खड़ाती, एम एम इसे एक इटेलियन को बेचबाच कर अमेरिका उड़ चला। दूसरे दिन ही उस ग्रीक औरत ने इस रेस्त्रॉ को कानूनन लॉक अप करवा कर एम एम के पीछे एक प्रोफेशनल कीलर एलर्ट करवा दिया।

गुरमैल की कही एक बात आज तक अक्सर मेरे कानो मे गूॅजती हैःये जीवन तो हॉथ से गया। पता नही इस जीवन के बाद एक दूसरा जीवन भी है या नही!अगर है और मै फिर से इस योनि मे जिस देश मे भी पैदा होऊॅगा, उसे कभी भी न छोड़ूॅगा। अगर मेरे मॉ बाप भिखमंगे होंगे तो मै भी उनके संग भीख मागूॅगा, धोबी होंगे तो उनके संग घाटों पर कपड़े कचारने जाऊॅगा, पर अपना देश कभीं न छोड़ूॅगा। कौन सा तीर जर्मनी मे रह कर मैने मार लिया!जालंधर मे रह गया होता तो आराम से भैंसे चराता, उनका दूध बेचता, अपनी मूछें भैंस की घी लगा कर ऐंठता और घर वाली के हॉथो महा मट्ठा छानता...

मेट्रो मे ज्यादे भींड़ न थी और हमारे बीच की दूरी भी ज्यादे न थी। मै और एम एम एक दूसरे के सामने खड़े थे। मैने तो उसे देखते ही पहचान लिया, पर वो नही। सामने खड़ा वो अपनी भवें नचा नचा कर बस मुस्कराये जा रहा था। रह रह कर वो खिलखिलाने भी लग पड़ता था। मैने उसे नही टोका।

न जाने कितने मेट्रो स्टेशन आए और गए। कई बार वो मुझे घूरा भी, पर वो मुझे पहचान न पाया।

उसने एक ढीली ढाली काले रंग की पतलून और कैम्पिन्सकी होटल से पार की गई लाल रंग का कोट पहन रखा था।

पता नही वो कहॅ से आ रहा था और कहॅ जा रहा था!
बर्लिनरस्ट्रासे पर वो मेट्रो से बाहर निकला।मेट्रो अभी भी खड़ी थी।
प्लेटफार्म पर ही एक बड़ा सा ऐशट्रे ठीक सीढियो के बगल मे था जिसमे फेंके गए सिगरेटों के सारे टोटे वो अपनी कोट की जेब मे ठूँस कर सीढियों से नीचे उतर गयाः

प्रमोद कुमार सिंह